International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-03-2025, Accepted: 13-04-2025, Published: 29-04-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 23-26

शिक्षक शिक्षा में परिवर्तनः गुरुकुल से डिजिटल शिक्षा तक भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण

मधुर[1], डॉ चंद्रशेखर[2]
[1] शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, अजमेर, राजस्थान, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश
भारत मे ज्ञान का समृद्ध भंडार है, जिसमें गुरुकुल प्रणाली में प्राचीन ज्ञान, वैज्ञानिक अवधारणाओं और सांस्कृतिक प्रथाएं शामिल है। आधुनिक शिक्षक शिक्षा, पश्चिमी शिक्षा शैली को अपनाने में पारंपरिक भारतीय ज्ञान को धूमिल करते नजर आ रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF & FS) 2023 द्वारा आधुनिक शिक्षक शिक्षा के साथ पारंपरिक भारतीय ज्ञान (गुरुकुल प्रणाली) के एकीकरण को प्रोत्साहित किया। इस अध्ययन में विभिन्न शोध पत्रों एवं पुस्तकों के साहित्य समीक्षाओं द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया है, कि आधुनिक शिक्षक शिक्षा और भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करके गुरुकुल से डिजिटल शिक्षा तक के सफर को सुगम एवं सरल बनाने में सहायक होगा। गुरुकुल के आदर्शों और आधुनिक तकनीकी एकीकरण से शिक्षक शिक्षा को नई दिशा प्राप्त होगी।

मूल शब्दः भारतीय ज्ञान प्रणाली, डिजिटल शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, गुरुकुल प्रणाली, पारंपरिक ज्ञान

शिक्षक शिक्षा, भावी शिक्षकों की गुणवत्ता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत गुरुकुल परंपरा, योग, आयुर्वेद, वेद, उपनिषद, दर्शन और प्राचीन गणित की समृद्ध परंपरा सम्मिलित है। इन सभी का मूल उद्देश्य अनुभवात्मक शिक्षण, नैतिक मूल्यों का विकास और संपूर्ण शिक्षा (Holistic Education) को बढ़ावा देना था। भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्दों की व्युत्पत्ति निम्नलिखित हैः

1. **गुरुकुलः** संस्कृत के 'गुरु' (शिक्षक) और 'कुल' (परिवार) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ ''गुरु का परिवार'' है।

2. **विद्याः** संस्कृत में 'विद' धातु से बना है, जिसका अर्थ ''ज्ञान प्राप्त करना'' है।

3. **शिक्षाः** संस्कृत शब्द 'शिक्षा' से लिया गया है, जिसका अर्थ ''सीखना और सिखाना'' है।

4. **ज्ञानः** यह 'ज्ञा' धातु से बना है, जिसका अर्थ ''समझना और जानना'' है।

यह शोध पत्र भारत में शिक्षक शिक्षा के ऐतिहासिक विकास, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण की आवश्यकता और डिजिटल शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में एकीकृत करना शिक्षा के क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत में गुरुकुल प्रणाली का प्रचलन था, जो अनुभवात्मक शिक्षा, नैतिक मूल्यों और समग्र विकास पर बल देती थी (Sharma, T. 2024) आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विकास के साथ, विशेष रूप से डिजिटल युग में, पारंपरिक ज्ञान को समकालीन शिक्षाशास्त्र के साथ जोड़ने की आवश्यकता बढ़ गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्व को मान्यता देती है और इसे एक संतुलित, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी शिक्षा प्रणाली के रूप में उभरने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानती है (Kumar & Singh, 2023)।

गुरुकुल आधारित शिक्षा से आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की ओर बदलाव के दौरान पारंपरिक ज्ञान की समृद्धि को अक्सर अनदेखा कर दिया गया है। हाल के शोध यह दर्शाते हैं कि शिक्षक शिक्षा में IKS को शामिल करने से महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और नैतिक विकास में वृद्धि हो सकती है (पटेल, 2022)। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन और गणित जैसी पारंपरिक विधाओं को शिक्षक शिक्षा में शामिल करने से शिक्षण पद्धतियों की समग्र समझ विकसित हो सकती है (राव, 2023)। इसके अतिरिक्त, डिजिटल उपकरणों और ई–लर्निंग प्लेटफार्मों का उपयोग करके IKS को नवाचारपूर्ण तरीकों से प्रचारित किया जा सकता है, जिससे यह व्यापक दर्शकों तक पहुँच सके (चक्रवर्ती, 2024)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षा में सुचारू रूप से एकीकृत करने में कई चुनौतियाँ भी हैं। इनमें बदलाव के प्रति प्रतिरोध, पाठ्यक्रम में आवश्यक पुनर्गठन, और पारंपरिक ज्ञान की वैज्ञानिक पुष्टि से जुड़ी चिंताएँ शामिल हैं (वर्मा और दास, 2023)। हालाँकि, रणनीतिक रूपरेखा और नीतिगत समर्थन के माध्यम से पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के समावेश को सुगम बनाया जा सकता है, जिससे शिक्षक शिक्षा प्रणाली को और अधिक समृद्ध बनाया जा सके (Mishra, S. 2023)।

यह शोध पत्र भारत में शिक्षक शिक्षा के ऐतिहासिक विकास, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में IKS के एकीकरण के महत्व, और डिजिटल प्लेटफार्मों की भूमिका का विश्लेषण करता है, जो पारंपरिक ज्ञान और समकालीन शिक्षा के बीच सेतु का कार्य कर सकते हैं। मौजूदा शोध और नीति ढांचे की समीक्षा करके, यह अध्ययन पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों की शक्ति को समाहित करने वाले एक मिश्रित मॉडल की संभावनाओं को उजागर करने का प्रयास करता है।

यह अध्ययन भारतीय शिक्षक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को एकीकृत करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। जो प्रमुख विषयों, चुनौतियों और अवसरों की पहचान करता है। PRISM। फ्रेमवर्क प्रासंगिक साहित्य के विश्लेषण के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है। इस शोध का महत्व इसकी क्षमता में निहित है कि यह पारंपरिक भारतीय शिक्षा और समकालीन शिक्षाशास्त्र प्रगति के बीच ज्ञान अंतर को पाट सके, अंततः एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दे सके जो भारत के सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों के साथ संरेखित हो।

उद्देश्यः इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षा के आधुनिक ढांचे में प्रभावी ढंग से एकीकृत किया जा सकता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि IKS को अपनाने से न केवल शिक्षकों की नैतिक और बौद्धिक समझ का विकास होगा, बल्कि यह संज्ञानात्मक और अनुभवात्मक शिक्षा को भी मजबूत करेगा। इसके अतिरिक्त, यह शोध पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक डिजिटल शिक्षा के बीच सेतु के रूप में कार्य करने वाले प्रभावी मॉडलों की संभावनाओं को भी उजागर करता है।

अध्ययन की पद्धति (Methodology)

अध्ययनों के चयन प्रक्रिया, स्क्रीनिंग और अंतिम चयन को दर्शाने के लिए एक च्प्ैड। आरेख का उपयोग किया गया।

1. डेटा स्रोत और खोज रणनीति

Google Scholar, Research Gate, Scopus और Web of Science जैसे डेटाबेस का उपयोग करके एक व्यवस्थित साहित्य खोज की गई। कीवर्ड में शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, गुरुकुल और आधुनिक शिक्षाशास्त्र, और भारतीय ज्ञान प्रणाली का डिजिटल एकीकरण शामिल थे। लेखों को प्रासंगिकता, नवीनता और उन पत्रिकाओं के प्रभाव कारकों के आधार पर फ़िल्टर किया गया जिनमें वे प्रकाशित हुए थे। खोज रणनीति का उद्देश्य विषय की व्यापक समझ प्रदान करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के अध्ययनों को शामिल करना था।

2. समावेशन और बहिष्करण मानदंड

मानदंड	समावेशन मानदंड	बहिष्करण मानदंड
समय सीमा	2010–2025	2010 से पहले
भाषा	अंग्रेजी, हिंदी	अन्य भाषाएँ
अध्ययन प्रकार	सहकर्मी–समीक्षित लेख, नीति पत्र	गैर–सहकर्मी–समीक्षित ब्लॉग, राय लेख
प्रासंगिकता	शिक्षक शिक्षा में IKS से सीधे संबंधित	असंबंधित अध्ययन

परिणाम और विषयगत विश्लेषण

1. साहित्य समीक्षा से प्रमुख विषय

विषय	विवरण
शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का ऐतिहासिक विकास	गुरुकुल से आधुनिक शिक्षा तक के परिवर्तन की जांच करता है, और समकालीन शिक्षाशास्त्र पर इसके प्रभाव का पता लगाता है (Sharma, T-2024)।
भारतीय ज्ञान प्रणाली और समग्र शिक्षण दृष्टिकोण	चर्चा करता है कि कैसे पारंपरिक ज्ञान संज्ञानात्मक, नैतिक और भावनात्मक बुद्धि को बढ़ावा देता है, जो अनुभवात्मक शिक्षा और आत्म–जागरूकता पर जोर देता है (पटेल, 2022)।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और IKS एकीकरण	IKS एकीकरण के लिए सरकारी पहलों और आधुनिक शिक्षक शिक्षा के लिए नीतिगत प्रभावों का मूल्यांकन करता है (वर्मा और दास, 2023)।
भारतीय ज्ञान प्रणाली –आधारित शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ	खोज करता है कि कैसे ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, AI और डिजिटल उपकरण शिक्षक प्रशिक्षण में IKS के प्रसार को सुविधाजनक बनाते हैं (राव, 2023)।
भारतीय ज्ञान प्रणाली के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ	प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, संरचित पाठ्यक्रमों की अनुपस्थिति और संस्थागत ढांचे से प्रतिरोध जैसी बाधाओं की पहचान करता है (कुमार और सिंह, 2023)।

2. विस्तारित साहित्य समीक्षा

1. शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का ऐतिहासिक विकास

महाभारत से शैक्षिक अंतर्दृष्टि

महाभारत न केवल एक ऐतिहासिक ग्रंथ है, बल्कि इसमें शिक्षा, नैतिकता और नेतृत्व से जुड़े गहरे संदेश निहित हैं। गुरु–शिष्य परंपरा के कई उदाहरण इस ग्रंथ में मिलते हैं, जैसे कि द्रोणाचार्य और अर्जुन, भीष्म और युधिष्ठिर, तथा कृष्ण और अर्जुन। ये संबंध विभिन्न शैक्षिक दृष्टिकोणों को दर्शाते हैंः–

- **अनुभवात्मक शिक्षा (Experiential Learning):** द्रोणाचार्य ने कौरव और पांडवों को युद्ध–कौशल सिखाया, जिसमें व्यवहारिक ज्ञान (।चचसपमक ज्ञदवूसमकहम) पर विशेष जोर दिया गया था (Sharma, R. 2021)।
- **नैतिक शिक्षा और निर्णय क्षमताः** भीष्म द्वारा शांति पर्व में युधिष्ठिर को दिए गए उपदेश शिक्षकों के लिए नैतिक शिक्षा और शासन की अवधारणा को समझाने में सहायक हैं (सिंह, 2022)।

भगवद गीता और शिक्षक शिक्षा

भगवद गीता, जो महाभारत के भीष्म पर्व में वर्णित एक दार्शनिक संवाद है, आत्म–जागरूकता, कर्तव्य और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देती है, जो शिक्षकों के लिए आवश्यक गुण हैं। इसके प्रमुख शैक्षिक सिद्धांत निम्नलिखित हैंः–

- **परिवर्तनकारी शिक्षा (Transformational Learning):** श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद संरचनावादी शिक्षाशास्त्र (Constructivist Pedagogy) का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहां ज्ञान संवाद और आत्म–चिंतन के माध्यम से निर्मित होता है (चक्रवर्ती, 2020)।
- **सिद्धांत और व्यवहार का संतुलनः** गीता में कर्म योग (Action), ज्ञान योग (Knowledge), और भक्ति योग (Devotion) का उल्लेख मिलता है, जो आधुनिक समग्र शिक्षा प्रणाली (Holistic Education) से मेल खाता है (Verma, K. 2023)।

शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में: कृष्ण एक शिक्षक के रूप में अर्जुन की शंकाओं का समाधान करते हैं और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा देते हैं, जो व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) का उदाहरण है (राव, 2019)

शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली की उत्पत्ति गुरुकुल प्रणाली से हुई, जो छात्र–केंद्रित, विसर्जन शिक्षा अनुभव पर जोर देती थी (Sharma, T-2024)। गुरु–शिष्य परंपरा ने समग्र विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहां छात्रों ने अवलोकन, संवाद और अभ्यास के माध्यम से सीखा। हालांकि, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने पश्चिमी शिक्षा मॉडल को पेश किया, जिसने अवधारणात्मक शिक्षा के बजाय याद करने पर जोर

दिया, जिससे स्वदेशी ज्ञान संचरण बाधित हुआ (Kumar & Singh, 2023)। हाल के प्रयास, विशेष रूप से NEP 2020 के माध्यम से, मुख्यधारा की शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः एकीकृत करने का प्रयास करते हैं (पटेल, 2022)। गुरुकुल प्रणाली ने समग्र विकास पर जोर दिया, जिसमें आध्यात्मिक, नैतिक और शैक्षणिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो गुरु और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंधों के माध्यम से होता था (Jogalekar-j-2024)। शिक्षा व्यक्तिगत, अनुभव–आधारित और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के साथ एकीकृत थी। ब्रिटिश शासन ने एक संरचित, पाठ्यक्रम–आधारित शिक्षा प्रणाली को पेश किया, जिसने पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को पीछे छोड़ दिया (Acharya-S-2024)। स्वतंत्रता के बाद, शिक्षक शिक्षा में भारतीय विरासत को शामिल करते हुए वैश्विक शैक्षिक मानकों के अनुकूल सुधार किए गए (Meghwal-D-2025)।

2. भारतीय ज्ञान प्रणाली और समग्र शिक्षण दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक प्रमुख पहलू अंतःविषय शिक्षा पर जोर है। पारंपरिक सिलोड शिक्षा प्रणालियों के विपरीत, भारतीय ज्ञान प्रणाली खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, भाषा विज्ञान और गणित जैसे विषयों को एकीकृत करता है, जो एक अधिक परस्पर जुड़े ज्ञान ढांचे को बढ़ावा देता है (Verma, A., & Das, K (2023)। इसके अलावा, भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षाशास्त्र नैतिक और नैतिक तर्क को प्रोत्साहित करता है, जो पाठ्यपुस्तकों से परे ज्ञान प्रदान करने में सक्षम सुसंस्कृत शिक्षकों को विकसित करता है (Rao, M. (2023)।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली एकीकरण

छम्ब् 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्व को पहचानती है और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में इसके व्यवस्थित एकीकरण का आह्वान करती है। यह नीति भारतीय ज्ञान प्रणाली पर केंद्रित शोध केंद्रों की स्थापना, प्रशिक्षण मॉड्यूल में स्वदेशी शिक्षाशास्त्र प्रथाओं को शामिल करने और वैकल्पिक ज्ञान प्रतिमानों की मान्यता को बढ़ावा देती है(Mishra, 2023)। हालांकि, सफल कार्यान्वयन के लिए संकाय प्रशिक्षण कार्यक्रम और पाठ्यक्रम मानकीकरण प्रयासों की आवश्यकता होती है (Kumar & Singh, 2023).।

4. IKS–आधारित शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ

डिजिटल शिक्षा में प्रगति के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली अब पारंपरिक प्रणालियों तक सीमित नहीं है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, AI–संचालित शिक्षण मॉड्यूल और वर्चुअल रियलिटी सिमुलेशन का – उपयोग भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित शिक्षा तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने के लिए तेजी से किया जा रहा है (चक्रवर्ती, 2024)। राव (2023) ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, जैसे डव्ब्े और डिजिटल रिपॉजिटरी, की भूमिका को उजागर करते हैं, जो प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को वैश्विक स्तर पर शिक्षकों के लिए अधिक सुलभ बनाते हैं।

5. भारतीय ज्ञान प्रणाली कार्यान्वयन में चुनौतियाँ

इसके लाभों के बावजूद, शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैः

मानकीकृत पाठ्यक्रमों की कमीः शिक्षण पद्धतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने के लिए कोई एकसमान ढांचा नहीं है (Sharma, T. 2024)।

सीमित संकाय प्रशिक्षणः कई शिक्षकों को भारतीय ज्ञान प्रणाली में औपचारिक प्रशिक्षण की कमी है, जिससे अपनाने में प्रतिरोध होता है (Kumar & Singh, 2023).।

संस्थागत बाधाएँः आधुनिक शिक्षा नीतियाँ अभी भी स्वदेशी ज्ञान मॉडलों पर पश्चिमी ढांचे को प्राथमिकता देती हैं (Mishra, S. 2023)।

6. प्रमुख निष्कर्ष

- **समग्र शिक्षण दृष्टिकोणः** भारतीय ज्ञान प्रणाली नैतिक, नैतिक और अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देता है, जो छात्र संलग्नता और समझ को बढ़ाता है (Sharma, T. 2024)।

- **पाठ्यक्रम अंतरालः** शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान प्रणाली एकीकरण की संरचित कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है (Kumar & Singh, 2023).।

- **डिजिटल अनुकूलनः** प्रौद्योगिकी ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म और AI आधारित मॉड्यूल के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को सुलभ बनाकर अंतराल को पाटने के अवसर प्रदान करती है (राव, 2023)।

- **परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधः** कई शिक्षकों को भारतीय ज्ञान प्रणाली पद्धतियों में प्रशिक्षण और जोखिम की कमी है, जिससे संस्थागत स्तर पर अपनाने में झिझक होती है (Mishra, S. 2023)।

- **नीतिगत समर्थनः** NEP 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली कार्यान्वयन के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है, लेकिन प्रभावी निष्पादन और मूल्यांकन ढांचे की आवश्यकता है (वर्मा और दास, 2023)।

भविष्य की दिशाएँ

- भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षण तकनीकों के साथ प्रभावी ढंग से जोड़ने वाले शिक्षाशास्त्र मॉडलों पर शोध।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली पद्धतियों पर केंद्रित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास।
- संरचित पाठ्यक्रम एकीकरण सुनिश्चित करने के लिए नीतिगत पहल।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली की पहुंच बढ़ाने के लिए AI संचालित उपकरणों की खोज

निष्कर्ष

शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण एक समग्र, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और अंतःविषय शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली के ऐतिहासिक विकास, शिक्षक शिक्षा में इसके समावेश के लाभों और इसके क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों को उजागर करता है। हालाँकि, मानकीकृत पाठ्यक्रम की अनुपस्थिति, प्रशिक्षित संकाय की सीमित उपलब्धता और संस्थागत अवरोध जैसी चुनौतियाँ इस प्रक्रिया को बाधित कर सकती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, डिजिटल शिक्षण प्लेटफॉर्म और शिक्षकों में बढ़ती जागरूकता के साथ, शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं। भविष्य के अनुसंधानों को संरचित पाठ्यक्रम ढांचे, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और तकनीकी समाधानों के विकास पर केंद्रित होना चाहिए, जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली को व्यापक रूप से अपनाने में सुविधा हो। पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान प्रणालियों के बीच समन्वय स्थापित करके, भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण एक प्रभावी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी शिक्षा प्रणाली के निर्माण में योगदान दे सकता है, जो भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत को भी संरक्षित करेगा। यह सहयोग न

केवल शिक्षकों में महत्वपूर्ण सोच, नैतिक तर्क और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देगा, बल्कि उन्हें आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य को प्रभावी रूप से नेविगेट करने के लिए भी सक्षम बनाएगा।

शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को समाहित करना एक सकारात्मक और अनिवार्य कदम है, जो शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाएगा। इस शोध पत्र ने दर्शाया है कि गुरुकुल प्रणाली, अनुभवात्मक शिक्षण और नैतिक शिक्षा के सिद्धांत वर्तमान शिक्षक शिक्षा प्रणाली में आज भी प्रासंगिक हैं। इसके अतिरिक्त, डिजिटल तकनीक के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को व्यापक रूप से अपनाने की संभावनाएँ मौजूद हैं, हालाँकि इसके लिए पाठ्यक्रम पुनर्गठन और नीतिगत सुधारों की आवश्यकता है।

यह शोध शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभाव, लाभों और संभावित चुनौतियों को रेखांकित करता है, और यह सुझाव देता है कि पारंपरिक एवं आधुनिक शिक्षा प्रणालियों का समन्वय एक सशक्त शिक्षक शिक्षा मॉडल के निर्माण में सहायक हो सकता है।

References

1. Chakraborty A. The Bhagavad Gita as a Model for Transformational Pedagogy. J Indian Philos,2020:45(2):213-29.
2. Chakraborty A. Digital learning and Indian Knowledge Systems. Educ Technol J,2024:15(2):45-58.
3. Dr. Acharya S. Integration of Indian Knowledge System into Higher Education through NEP 2020. Int J Res Cult Soc, 2024, 8(9). ISSN(O):2456-6683. DOI:10.2017/IJRCS/202409012.
4. Jogalekar J. The Significance of Gurukul Education System of Bharat & Its Importance in Indian Knowledge System: A Thematic Analysis. J Res Humanit Soc Sci,2024:12(12):61-8. ISSN(Online):2321-9467. Available from: http://www.questjournals.org/
5. Kumar R, Singh P. Colonial education policies and their impact on IKS. J Hist Educ,2023:28(4):112-29.
6. Mishra S. PRISMA methodology in educational research. Educ Res Rev,2023:20(3):78-91.
7. Ministry of Education. National Education Policy 2020. Government of India: 2020. Available from: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
8. Patel V. NEP 2020 and the revival of Indian traditional knowledge. Policy Educ J,2022:19(1):33-47.
9. Rao M. AI and e-learning for Indian Knowledge Systems. J Digit Pedagog,2023:22(5):67-82.
10. Rao S. Krishna as a Teacher: Pedagogical Lessons from the Bhagavad Gita. Indian J Educ Stud,2019:37(1):45-62.
11. Sharma R. Mahabharata and Experiential Learning: Lessons for Modern Education. Int J Indic Stud,2021:12(3):112-30.
12. Sharma T. Holistic education through Indian Knowledge Systems. Glob Educ Rev,2024:31(2):15-30.
13. Singh P. Bhishma's Teachings in the Shanti Parva: Ethics, Leadership, and Teacher Education. Vedic Res J,2022:9(4):78-94.
14. Verma A, Das K. Integrating IKS into teacher training curricula. Pedagog Innov,2023:25(3):90-105.
15. Verma K. Integrating Bhagavad Gita's Educational Philosophy in Contemporary Teacher Training. Glob J Humanit,2023:28(1):134-52.